# वेद कालीन वांम्मय में वर्तमान भारत

वेद भारतीय संस्कृति की अनूठी प्राचीन परंपरा के शिक्षनीय मांगलिक उपादान हैं - इनकी सामाजिकता, राजनैतिकता, सांस्कृतिक उत्थानवत्ता आदि से प्राचीन भारत के विविध स्वरूपों का दर्शन इस सार सार्वभौमत्त्व से हमें प्राप्त होता है

**प्राचीन राजकीय पद्धति :-** प्राचीन काल से राजकीय व्यवस्था के अन्तर्गत कहा गया है कि देवों अर्थात उनके पूजक हिंदुओं में आरंभ में कोई राजा नहीं था - जब असुरों से युद्ध करते समय देवों ने देखा कि हम लोग बार बार पराजित हो रहे हैं - तब वे परिणाम पर पहुंचे कि आसुरों की सफलता का कारण यह है कि उनमें नेतृत्व करने वाला एक राजा है अत: उन्होंने निश्चय किया कि हम लोगों को भी एक राजा निर्वाचित करके देखना चाहिए और वे लोग तब एक निर्वाचित राजा के लिये सर्वसम्मत हुये - देवों और असुरों में युद्ध हो रहा था - असुरों ने देवों को परास्त कर दिया देवों ने कहा कि असुरों के द्वारा हमारे पराजित होने का कारण यही है कि हम लोगों में कोई राजा नहीं है - हम लोगों को एक राजा निर्वाचित करना चाहिए। सब लोग सम्मत हो गए

**'' देवासुरा वा'एषु लोकेषु समयतंत.....**
**तांस्ततोऽसुरा अजयन..... देवा अब्रुवन्न राज**
**तया वै नो जयंति राजानं करवामहा इति तथेति**

(ऐतरेय ब्राह्मण १-१४)

राजा का निर्वाचन समिति में एकत्र होने वाले लोग किया करते थे - कहा जाता है कि वहाँ जो लोग एकत्र होते थे वे एकमत हो कर राजा का निर्वाचन करते थे - समिती उसे नियुक्त करती थी और उससे शासनाधिकार ग्रहण करने की प्रार्थना करती थी - आशा की जाती थी कि वह अपने पद से च्युत न होगा और शत्रुओं का दलन करेगा। अथर्व वेद ६,८७,८८, ऋग्वेद १०,१७३ में राजा के निर्वाचिन का एक पूरा गान इस प्रकार होता था -

**'' आ त्वाहार्षमंयर भूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलत**
**विशस्त्वा सर्वा वाडछन्तु मा त्वद्रष्ट्रमधि भ्रशत्।**
**इहैवैधि माप च्योष्ठा: पर्वत इवाविचा चलत्**
**इंद्रेहैव ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमुधारय**
**इंद्र एतमदीधरद्ध्रुवं ध्रुवेण हविषा**
**तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पति:**

इसका अर्थ है :- तुम हर्षपूर्वक हम लोगों में आओ, अविचल रूप से स्थित हो, सब लोग तुम्हें चाहते हैं तुम राष्ट्र से भ्रष्ट न हो। तुम यहाँ पर्वत के समान दृढ़ रहो और तुम्हारा पतन न हो तुम यहाँ इंद्र के समान अविचल रहो। तुम यहाँ राष्ट्र को धारण करो - तुम दृढ़ता और निश्चयपूर्वक शत्रुओं को पराजित करो और जो लोग शत्रुता का आचरण करें, अपने पैरों से कुचल डालो सब दिशाएँ एक होकर तुम्हारा सम्मान करती हैं राज सिंहासन पर आरोहण करने के उपरांत राजा उपस्थित व्यक्तियों तथा राजकर्ताओ से उच्च राज्याधिकारी या राजमंत्री आदि होते थे ( मिलावो महा गोविंद सुत्तं)

राजा कहा करता था कि है पर्ण ग्रामणी और जो लोग मेरे पास उपस्थित हैं मेरी सहायता करें अथर्व वेद (३,५,६,७) प्रजा कहती थी कि हे बलवान सुमन तुम अपने जीवन के दसवें दशक तक यहाँ शासन करो। अथर्व वेद (दशामी मुग्र: सुमना वशेह ) ( ३-४-७)

इस विवरण से हम इस तात्पर्य पर पहुंचते हैं कि वैदिक काल में राजा का निर्वाचन बहुत ही सरल होता था ठीक से काम होता था। राजा को च्युत भी किया जा सकता था - वेद मंत्रों में एकराजता के राजनीतिक दर्शन या विज्ञान के सभी मूल तत्व पाये जाते हैं। वेदकालीन समस्या संस्कृति आर्थिक जीवन आदि पर यदि विचार किया जाय तो यह निर्णय स्पष्ट हो जाता है वर्तमान युग की जो अनिर्वाचनीय विडंबना चल रही है - वह हजारों वर्ष पहले अपने मिल मांगलिक स्वरूप में चल रही है जिसे निरन्तर बढती सभ्यता की ओर न जाकर एक अंधकार युग की तरफ बढ़ता हुआ युग दिखाई दे रहा है। वर्तमान की राजनीति, समाजनीति, अर्थ तंत्र व्यावहारिक न होकर बिडंबनापूर्ण भयावह स्थिति का परिचायक बन गया है। वैदिक युग की नारी शिक्षा का उदाहरण सम्पूर्ण विश्व

में अप्रतिम है - जितना गांभीर्य चिंतन शिक्षा, अध्यात्म, प्रकृति, नक्षत्र और विवेकशीलता का किया गया था - वह वर्तमान में दिखाई तो देता है पर सामाजिक ढांचा इस तरह से चरमरा गया है कि भविष्य के मंगल की कल्पना नहीं की जा सकती ! वैदिक युग से वर्तमान भारत की तुलना पूर्व पश्चिम से संगमस्थल पर जाकर रूकती दिखाई दे रही है - कारण कि मानव आचरण मानव व्यवहार मानव जीवन शैली का बदलता स्वरूप अपनी विकृत स्थिति को स्पष्ट कर रहा है जो कि वर्तमान के साथ साथ भविष्य के लिये भी सुखकारी या शांतिमय प्रतीत नहीं हो रहा है ।

**वर्तमान भारत की भयावहता और वैदिक युग के शिक्षकीय उपदेशों की आवश्यकता :-** वर्तमान भारत में राजकीय तथा सामाजिक परिस्थितियों को सुधारने उसे सही रास्ते में लाने तथा अपनी व्यक्तिगत उन्नति के साथ साथ सामूहिक उन्नति तथा राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय जगत के '' **उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्** '' के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये वैदिक उदात्त भावनाओं का प्रस्फुटन या संकल्पन अधिक आवश्यक है कारण कि मानवीय मूल्यों का ह्रास जब भी जिस संस्कृति में हुआ है उसे नष्ट होते देर नहीं लगी है - कारण कि जिन जीवन मूल्यों के आधार पर सांस्कृतिक सभ्यता और मानव जीवन का संरक्षण संवर्धक होता है वह भारत की वर्तमान राजनीति और सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों को रसातल में पहुंचाने की तैयारी चल रही है - राजनीतिक मूल्य भ्रष्टाचार अनाचार अनीति, अत्याचार के चंगुल में फंस गये हैं - सामाजिक मूल्यों में नारी का जीवन संकटग्रस्त हो चला है - नारी और पुस्तकालय प्राचीन काल में सभ्यताके संवर्धन माने जाते थे उन्हें ही मानव मानव का भेद नष्ट करने के लिये लगा है मानव संचेतना विकास की ओर न होकर अंधकार युगकी ओर बढ़ रही है - जिससे भारतीय संस्कृति के नष्ट होने का समय नजदीक लग रहा है - ऐसे विकट समय में व्यावहारिक रूप से हमें वेद और वैदिक साहित्य ही रास्ता दिखा सकता है - वेद आज के समय में एक पद्य दृष्टा के रूप में दिव्य प्रकाश लेकर सम्पूर्ण विश्य को आलोकित कर सकते हैं अब हम वेद की उदात्त भावनाओं के माध्यम से वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर ध्यान देंगे....

यजुर्वेद १/१ में मंत्र आया है

'' **देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण**''

अर्थात- सबको उत्पन्न करने वाला देव तुम सब को श्रेष्ठतम कार्य करने को प्रेरित करें । यहाँ हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम सबको मिल जुलकर श्रेष्ठतम् कार्यों को करना चाहिये तभी उन्नति संभव होती है। प्रत्येक मनुष्य की यह महत्वाकांक्षा होनी चाहिए कि वह ऐसे कार्य करे जो उन्नतिकारक एवं प्रशंसनीय हों । ऐसे कर्म नहीं करने चाहिये जो अवनति की ओर प्रवृत्त करें । यहाँ पर श्रेष्ठतम कर्म (Most prominent ) करने की प्रेरणा है

जिसके शारीरिक उन्नति (Physical Development )
मानसिक उन्नति (Mental Development )
वैयक्तिक उन्नति (Personal Development)
सामुदायिक उन्नति (Communal Development )

सभी का विकास हो ।

'' **साविश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वद्यायाः**

( १/४/ यजुर्वेद)

**अर्थात** - सर्व आयु, सर्वकर्मशक्ति व सर्वधारक शक्ति के रूप में तीन कामधेनुएँ हैं - जो जीवन के पूर्ण लगन से प्रयत्न करने पर परम लक्ष्य की प्राप्ति के संवाहक होती हैं ।

**इदमहमनृतात्सत्यमुपमि - (१/५/ यजुर्वेद )**

**अर्थात्** - यह मैं असत्य त्यागकर सत्य को ग्रहण कर रहा हूँ - अर्थात सत्य को स्वीकारना उसका पक्ष लेना सत्याचारण सत्यपालन आत्मोन्नति के लिये विशेष उपयोगी माना गया है मा मेर्मा संक्विया (१/२३ यजुर्वेद )

बिना किसी भय के अपना कर्तव्य करता रह ! भयभीत मानव के लिये उन्नति का मार्ग नहीं खुलता व्यक्तिगत सामजिक और राजनैतिक रूप में निर्भय ही उन्नति पा सकता है ।

'' **वैदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यौ वे दो ऽ मवस्तेन मह्यं वेदो भूया : ।।**

अर्थात् - वेद सबका ज्ञाता है - जिस प्रकार वेद देवताओ के लिये ज्ञानदाता हुआ उसी प्रकार मुझे ज्ञान देने वाला ही ज्ञान का भण्डार वेद हैं मनुष्य जीवन के ज्ञान कर्म उपासना दिव्यता आदि सभी का जाज्वल्यमान विविधतापूर्ण प्रकाश वेद में निहित है अत: उसका पालन कर अपने जीवन को समुन्नत कर !

'' **अस्थूरिणौ गार्हपत्यानि सन्तु शतं हिमा : ''**

अर्थात - गृहस्थ धर्म संबंधी पति पत्नी अपने कर्तव्य को सौ वर्षो तक मांगलिक रूप से निभाते रहें !

गृहस्थजीवन की मंगलमयता ही सुखी जीवन का आधार होती है - परस्पर एक दूसरे के सहयोग से जीवन स्थापन संस्कृति समाज और सभ्यता का संभावक बनता है !

'' **अक्रं कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा**

**अर्थात् :-** कर्म करने वाला सुखकारी वाणी के साथ कर्म करता रहे ''

'' **प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्**

**अर्थात्** - सुख सहित जिस पथ का अनुगमन किया जा सकता है और जहाँ विनाश का भय नहीं है ऐसे पथ पर चलकर उन्नति प्राप्त करें ।

'' **माहिर्भूर्मा पृदाकुर्नमस्त आतानानर्वा प्रेहि धृतस्य कुल्याऽ**

**उपऽऋतस्य पथ्या अनु**

**अर्थात् :-** हे सुख विस्तारक विद्वान ! तू सर्प के समान क्रोधी और मूर्ख की तरह अभिमानी मत हो तथा व्याधि की तरह हिंसक मत बन निर्विहन रूप से सत्यमार्ग का अनुसरण कर।

**मा भेर्मा सं विक्था ऊर्ज धत्स्व घिषणे वीड्वी सती विडयेथामूर्ज दधाथाम्। पाप्मा हतो न सोम: -**

अर्थात् - हे स्त्री तू शरीरात्मबल से युक्त होती हुई पति से मत डर मत काँप और बल पराक्रम को धारण कर ॥

**'' वाचस्पतिर्वाज न: स्वदतु स्वाहा**

**अर्थात्-** वाणी का अधिपति हमारी वाणी को मधुर बनाने। मीठी वाणी बोलनी चाहिये। **ग्रहा उर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्**

**अर्थात्** - बली और बल का संवर्धन करने वाले पुरूषों ! उस बुद्धि- मानों के लिए माननीय ज्ञान विभिन्न प्रकार से प्रदान करते रहो। वेदों में यज्ञ की विशिष्ठता बताई गई है :- **वाजश्चमे प्रसवश्च में प्रयतिश्च में प्रसितिश्च मे धीतिश्चमे कतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पताम्।**

**अर्थात्** - इस यज्ञ से हमारे लिये अन्न ऐश्वर्य यत्नशक्ति, विचारशक्ति; स्वरशक्ति , यश व स्तुति, श्रवणशक्ति, कर्णशक्ति तेजस्विता और आत्मशक्ति प्राप्त हो **कुर्वन्नवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा: एवं त्वामि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे**

**अर्थात् :-** सौ वर्ष जीने की इच्छा कर्म करते हुए करना चाहिये वेद में पांच कर्म की गति आवश्यक मानी गई है

१) अज्ञानियों को ज्ञान का दान देना चाहिए
२) बड़ों का आदर करना चाहिए
३) अतिथियों का सत्कार करना चाहिए
४) सब पर दया करनी चाहिए
५) दैवीय शक्तियों का आदर करना चाहिये

**'' असुर्यानामतेलोका अन्धेन तमसावृता - तांस्तेप्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना: ॥**

**अर्थात :-** जो आत्म घाती जन हैं वे अन्धकार अज्ञान से आच्छादित हैं और मनुष्य के बाद भी उसी में जाते हैं -

प्रत्येक व्यक्ति में शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियां होती हैं - शारीरिक बल को अजुर्या कहते हैं जो लोग शारीरिक शक्ति को झगड़ा मारपीट, दंगा फसाद एवं शक्ति प्रदर्शन के लिए व्यवहार में लाते हैं वे अज्ञान के कारण कुपथ पर चल अपने जीवन कष्ट प्रद कर लेते हैं - हमें आत्म घातीत्व कर्मों से सदैव बचना चाहिये घातक घाती तत्व में हैं -

१) जैसे ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न करना
२) बुरे कर्मों से बचना
३) स्वार्थ सहित भोगों में लिप्त रहना
४) लोभ करते रहना
५) अत्याचार अनाचार में सहयोग देना
६) दूसरे की सम्पत्ति हड़पना
७) एकता को भंग करना
८) आयु क्षीण होने वाले कर्मों में ग्रसित रहना
९) मन को अस्थिर रख लक्ष्यहीन जीवन जीना
१०) सत्कर्मों को न मानना
११) सत्य मार्ग कर्त्तव्य मार्ग पर अनिच्छा रखना

**'' हविषा आ जुहोत मर्जत हष''** - सामदेव ६३

अर्थात् - हवनीय द्रव्यों को हवन करो सर्वत्र शुद्ध वातावरण बने शुद्ध वायु शुद्ध जल शुद्ध अन्न की प्राप्ति एवं पर्यावरण की शुद्धता के लिये कार्य करना चाहिये।

**'' ब्रह्मद्विष अवजहि- अर्थात्** - ज्ञान से द्वेष करने वाले को मारना चाहिये

**उग्रं वच: अपावधी** - कठोर भाषण मत करे। **नह: अह: शुन्ध्यु: परिपदां** - नित्य स्वच्छता रखने वाला हमेशा रोगों से दूर रहता है।

**'' सुकृत्या महान् अभ्यवर्धथा :** - अर्थात् - शुभकर्म से मनुष्य महान बनता है

**विचर्षणि: हित: स चेतति** - ज्ञानी हितकारी होकर ज्ञान देते हैं

**मा ते रसस्य मत्सत द्रयाविन:** - अर्थात दोहरा आचरण करने वाले आनन्दित नहीं होते

**अतप्ततनू तदामो अश्नुते -**

तप मे तो बिना कुछ नहीं मिलता य: मां ददाति स आवत् -अन्नदाता सबका संरक्षण करता है।

**'' मायाविनो ममिरे अस्य मायया** - ज्ञानियों के ज्ञान प्रसार से बड़े बड़े मायावी भी श्रेष्ठ बन जाते हैं

**'' ऋतेतस्य पथ्या अनु -**

ज्ञानी सत्य मार्ग का अनुसरण करते हैं।

**'' आप्स्वन्तरमृतमप्सु मेषजम् -अथर्ववेद (४/४)**

'' जल में अमृत है - जल में औषधि है।

अदारसृप भवतु २०/१ अथर्ववेद

आपस में फूट उत्पन्न करने वाला कोई न हो

**'' ब्रह्मणस्पतेऽमि राष्ट्रायवर्धय (२९/१ अथर्ववेद )**

हे ज्ञानी, राष्ट्र के हित के लिए बढ़ाओ **ये श्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते ते वा अन्येषा कुम्भी पयदिधति सर्वदा** ( अथर्ववेद) अर्थात '' जो श्रद्धाहीन और धन के लोभी हैं - मांस भक्षण के लिये साथ बैठते हैं वे निश्चय ही दूसरों के धन पर मन रखते हैं''

**''यो जाम्या अमेष्ययस्तघत्सखायं दुधूर्षति ज्येष्ठो यद**

**प्रचेतास्तदाहुरधरागिति** (अथर्ववेद) अर्थात- जो मनुष्य कुलीन स्त्री को गिराता है जो मित्र को हानि पहुंचाता है, जो ज्येष्ठ होकर भी अज्ञानी है उसको पतित कहते हैं.

वेद में बताया गया है - **'' सुश्रुतौकर्णो भद्रश्रुतौ कर्णो भद्रं श्लोकं श्रूयासम् -** अर्थात दोनो कान उत्तम ज्ञान सुनें - कल्याणकारी वचन सुनने वाले मेरे कान हो सबके लिये वेदों में कितनी अच्छी बात कही गई है :-

**'' पश्येम शरदः शतम्। जीवेमशरदः शतम्। बध्येत शरदः शतम् रोहेम शरदः शतम्। भूयसी शरदः शतोत्।**

अर्थात्- हम सौ वर्ष देखें। हम सौ वर्ष जियें। हम सौ वर्ष ज्ञानलेते रहें। हम सौ वर्ष बढ़ते रहें। हम सौ वर्ष पुलट होते रहे। हम सौ वर्ष भली प्रकार रहें। हम सौ वर्ष सजते रहें। सौ वर्षो से भी अधिक जियें इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान भारत की राजकीय तथा सामाजिक परिस्थिति के सुधारने तथा मार्गदर्शन के रुप में प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था एँवं वर्तमान की स्थिति के सामंजस्य से ही भारतीय संस्कृति सभ्यता की रक्षा हो सकती है - वेद अनंत गुण ग्राही हैं सनातन सरोवर हैं जितना लें उतना ही भ्रम हैं - वर्तमान की विश्वजनीनशांति के लिये वेद ही मार्गदर्शक हो सकते हैं :-

**ॐ स्वस्तिनो मिमीतामश्विना भगः**
**स्वस्ति देव्यदितिरनव्वणिः स्वस्तिपूषा**
**असूरों दधातु नः स्वति द्यावापृथिवी**
**सुचेतुना - द्यौः शान्तिः रन्तरिक्षं**
**शान्तिः आपः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः**
**ॐ आ नो भद्द्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतासऽ उद्भिदः। देवा नो यथा सद्मिद्वृधेऽ असन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।।**

**और अब मेरी और से :-**

**हे मंगलमय भारत माता**
**दिव्य सुखद शुभमूर्तिललाम**
**हम भारत के प्यारे बच्चे**
**नित नव करते तुम्हें प्रणाम्**
**बल बुधि विद्या दे ओ माता**
**हरो कष्ट सब भारत जन के**
**नव प्रकाश की गरिमा आये**
**सुखद हर्ष हर मन तन जीवन के**

लेखक
विद्याचस्पति
डॉ. राजेश कुमार उपाध्यय '' नार्मदेय''
श्री कृष्णार्जुन सदन, श्री राजेन्द्र टॉरीज के पीछे
३ रा मकान शहडोल (म.प्र.) ४८४००१